MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

International Multilingual Research Journal

विद्यावार्ता ™

Issu-VII, Vol-II, July to Sept. 2014

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

Scanned by CamScanner

|| Index ||

1) इक्कीसवीं सदी में नारी : स्वप्न का यथार्थ
डॉ. (कु.) अरूण कुमारी सिंह, जबलपुर || पृ. 09

2) वर्तमान शिक्षा पद्धतिः एक अवधारणा
डॉ. सुरेन्द्र सिंह बागरी, सिहोरा || पृ. 11

3) मीमांसा दर्शन में अतिदेश
धर्मेन्द्र कुमार, दिल्ली || पृ. 13

4) शौनकोपनिषद्में प्रणवोपासना
परमार मायाबेन अमदावाद || पृ. 17

5) भारत में महिला आरक्षण विधेयक :महिला सशक्तिकरण
श्री ओम प्रकाश मलिक, जबलपुर (म.प्र.) || पृ. 18

6) भारतीय दर्शन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण
मोनिका शिवहरे, दिल्ली || पृ. 21

7) डी एन ए बारकोडिंग
नीरज त्रिपाठी,जबलपुर (म. प्र) || पृ. 27

8) आरम्भिक मध्यकालीन हरियाणा में मंदिरों की भूमिका
वीरेन्द्र सिंह, दिल्ली || पृ. 28

9) भारतीय समकालीन कला मे इन्सटॉलेशन का योगदान"
डॉ0 कुमकुम भारद्धाज, इन्दौर म. प || पृ. 31

10) शङ्कराचार्य और रामानुजाचार्य की सिद्धांत तुलना
Parmar Ajitsinh , vadodara || पृ. 35

11) संचार, जनसंचार माध्यम और हिंदी प्रचार–प्रसार
मुकेश कुमार, बडौत (बागपत) उत्तर प्रदेश || पृ. 37

12) संस्कृत काव्य—शास्त्र और आधुनिक हिंदी
डा. सर्वेश कुमार सिंह, वाराणसी || पृ. 40

Scanned by CamScanner

04

शौनकोपनिषद्में प्रणवोपासना

परमार मायाबेन रमणभाइ
पोलीस लाइन रू. नं. ४३
धोळका, अमदावाद

========================

उपनिषद् ग्रंथ एसे ग्रंथ है जिसने हमे हजारो सालो से ज्ञानरूपी अमृत दिया है और नित-नवीन ज्ञान देते भी रहेंगे । इर्शापनिषद् से लेकर श्र्वेतश्र्वतरोपनिषद् महत्त्वपूर्ण उपनिषद् माने जाते है । उसके बाद शौनकोपनिषद् का स्थान आता है । जिसकी प्रणवोपासना अतीव प्रसिद्ध है । यह उपनिषद अथर्ववेद की शौनकशाखा का उपनिषद है । यह उपनिषद कई सालो से अप्राप्य था । किन्तु कुछ ही साल पहेले यह उपनिषद मद्रास के अडियार पुस्तकालय के ग्रंथसंग्रहमें से एक प्रत मिल आने से इसका मूल पाठ प्राप्त हुआ । इस उपनिषद में केवल पांच कण्डिकाये है । जिसमें प्रणव अथवा उद्‌गीथ को विश्र्वयज्ञ और जीवन की प्रतिष्ठा माना गया है । जैसे की यज्ञ के ३ सवन, ३ देवता, ३ छंद और प्रणव की ३ मात्रा यह त्रिकका स्वरूप है। इसके साथ प्रणव की चौथी मात्रा मिल जाने से विश्र्व स्वस्तिक का रूप बनता है । इस तथ्य को इस उपनिषद में एक छोटी सी कहानी के माध्यम से समझाया गया है ।

देवता और आसुरो के बीच में युद्ध होता है । जिसमें असूरो के आक्रमण के सामने देवो की पराजय हो जाती है । तब इन्द्र ने गायत्री को प्रतिनिधि बना कर भेजा । लेकिन वह असूरो से डर कर वापस आ गई और कहने लगी कि - इन असूरो को जितना मेरे सामर्थ्य के बहार की बात है । तब इन्द्रने प्रणव को गायत्री की मदद के लिए जाने को कहाँ । आप में अक्षरब्रह्मकी शक्ति है । इसी लिए आपकी सहायता से गायत्री और देवो की जीत होगी । तब गायत्रीने इन्द्र से कहाँ कि प्रणव की सहायता से हम जीत जाएगें तो वह मेरे श्रेय में भागीदार हो जाएगा । तब इन्द्रने गायत्री को आश्र्वासन देते हुए कहाँ कि वह ऐसा नहीं करेंगे । बाद में इन्द्रने प्रणव से कहाँ आप गायत्री के सहायक बनो । आपका उच्चारण सबसे पहेले होगा उसके बाद प्रणव और गायत्री दोनो ने मिल कर असुरों (जीवन के आसुरी तत्त्व) पर चडाई की । उनकी सहायता के लिए प्रातःसवन (प्रातः काल का यज्ञ) और वस्तु देवगण भी साथ गए । युद्ध में असुरो की पराजय हुई और देवो की जीत हुई । ऐसा होने से गायत्री और प्रणव इन दोनों के वीर्य, शुक्र, ज्योति और अमृत सब एक समान हो गए । जैसा प्रभाव गायत्री का है वैसा ही प्रभाव प्रणवरूप मूलतत्त्व अर्थात् ब्रह्मतत्त्व का है । इसलिए कहा जाता है कि जितना औस जैसा जगत है वेसा हि इन्द्र है ।

कुछ समय बाद फिरसे देव और दानवो में युद्ध हुआ । इसबार माध्यान्दिन सवन (मध्याहन के यज्ञ) में पवमान सोम के मंत्रो का गान होने लगा । तब इन्द्रने त्रिष्टुभ माध्यादिन सवन और रुद्र छंद को असुरो के सामने लडने के लिए भेजा और उन सबके अंदर शक्ति संचार करने के लिए प्रणव को उनके साथ जोड दिया । फिरसे अक्षर उद्‌गीथ (प्रणव) की शक्ति से देवो की जीत हुई । अतः त्रिष्टुप और प्रणव दोनो के वीर्य, शुक्र, ज्योति और अमृत एक समान हो गए ।

तिसरी बार देव और दानवो के बीच में युद्ध हुआ । तब इन्द्रने जगती, सायंसवन और आदिष्टा के असुरो के सामने लडने के लिए भेजा । इस बार जगती असुरो से डर गई । इसीलिए इन्द्रने फिर से प्रणव अर्थात् उद्‌गीथ को उसके साथ जाकर सहायता करने को कहा । तब जगती ने गायत्री की तरह शंका व्यक्त की - यदि प्रणव मेरे साथ युद्ध में आएंगे और हमारी जीत होगी तो प्रणव भी जितके श्रेयमें भागीदार होगा । तब इन्द्रने उसे बताया कि महान लोग ऐसी लालसा रखते नहिं, इसलिए प्रणव ऐसा नहिं करेंगे । प्रणव की मदद से देवो की जीत और असुरो की हार हुई । प्रणव जगती का सहायक बना । इसी कारण दोनों के वीर्य, शुक्र, ज्योति और अमृत समान हो गए । वास्तव में प्रणव प्रतिष्ठा तत्त्व अर्थात् सर्व के आधारभूत मूलतत्त्व है ।

'प्रतिष्ठ ह वा एषा यत् प्रणव : ।
सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्रणव एव प्रतितिष्ठिन्ति ।।

Scanned by CamScanner

इस मे जो आदित्य है वही उद्‌गीथ का रूप है । और वही ब्रह्म भी है । यह वाक्य यजुर्वेद के ब्रह्म सूर्यसमं ज्योति : (२३-४८) वाक्य मे कही जानेवाली बात को याद करवाता है । इस आदित्यरूप उद्‌गीथ अर्थात् ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए ।

उपर दी गई प्रसंगकथा के पश्चात इस उपनिषद्‌ने जो सार दिया है वह विचित्र है । इस उपनिषद के अंत मे ऋषिने ऋग्वेद के प्रसिद्ध मंत्र ' चत्वारि शृङ्गा 'मंत्र लेकर ऋषिने उद्‌गीथ के रूप के साथ उसका मेल दिखाया गया है ।

'चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यान आविवेश ॥ '

अर्थात् प्रणवरूप उद्‌गीथ ही महान देव के रूप में सर्व प्राणीजगत में बसनेवाला वृषभ है । उसकी चार मात्राए इस वृषभ के चार शींग है । त्रयी विद्या उसके तीन पैर है । परोक्ष और प्रत्यक्ष उसके दो शिर है । जिसके कारण उद्‌गीथ का गान होता है । वह सप्त स्वर उसके सप्त हाथ है । सप्त स्वरो में जो मंद, मध्य और तार या उदात्त, अनुदात्त और स्वरित वह वृषभ के तीन बंधन है ।

इन्द्र ही यह उद्‌गीथ है और वही वृषभ भी है । ऐसा वेदो की संहिताओ मे कई बार कहा गया है ।

मरुत्वन्तं वृषभं वावधानम् । (ऋ. ३-४७-५)

उपनिषदो ने भी, जगत को इन्द्र के विश्वरूप वृषभ और छंदो के अमृत भाग से उत्पन्न हुआ कहा है ।

'यश्छन्दसां वृषभो विश्वरूप : ।

छन्दोभ्योऽध्यमृतात् संबभूव । स मे इन्द्रो मेधया स्पृणोतु ।

अतः भगवान शौनक ने कहा है कि - ॐ यह एकाक्षर मंत्र से ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए ।

❖❖❖

05

भारत में महिला आरक्षण विधेयक : महिला सशक्तिकरण

श्री ओम प्रकाश मलिक
सहा. प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शासकीय महाविद्यालय कुण्डम,
जबलपुर (म.प्र.)

========================

महिला सशक्तिकरण का उद्‌देश्य सदियो से चले आ रहे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को मुक्ति दिलवाना, पुरुष के समकक्ष स्थान प्रदान करना, महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भूमिका निभाना, महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में निरतंर प्रयासरत् व गतिशील रहने से है।

राजनैतिक समानता, न्याय और राजनैतिक प्रणाली की वैधता की दृष्टि से संसद में महिलाओं के लिये आरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी मुक्ति, आत्मसम्मान दिलाने आत्मनिर्भर बनाने सामाजिक समानता स्थापित करने हेतु आरक्षण होना आवश्यक है।

वर्ग और जाति की तरह यह लिंग भी सामाजिक, आर्थिक श्रेणी है। लिंग को यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो अनुभव यही बताता है कि सभी वर्गो, धर्मो और जातियों मे महिलाओं को आश्रित बनाकर रखा गया था। उनका सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण किया गया। समाज में उनका दर्जा निम्न रहा है।

हमारे धर्मग्रंथों में नारी को देवी का दर्जा दिया गया है इन्हें दया का अवतार, अन्नपूर्णा और बुराई का नाश करने वाली दुर्गा, और न जाने कितने नामों से पुकारा गया है लेकिन वास्तव में वे सदियों से घरों की चहारदीवारी में कैद हो कैदी की भूमिका निभाती रही हैं। कुछ इसके अपवाद हो सकते हैं। हमारे समाज की ऐसी सोच है कि वे जन्म से ही भेदभाव का शिकार हो जाती है।

Scanned by CamScanner

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr Bapu g.Gholap
+9198 50 20 32 95
+9175 88 05 76 95

Managing Director
Ghodke Archana
vidyawarta@gmail.com

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Ref.No. Accept/July 2016/ 174 **Date :** 10/ /07 /2016

To,

मायाबेन रमणभाई परमार

पी.एच.डी. कार्यकर

धोलका. जि. अहमदाबाद **(गुजरात)**

Subject : Regarding the Selection of Research Paper for VIDYAWARTA.(ISSN 2319 9318) (Impact factor 3.102)

R/ Sir/Madam,

We are very glad to make you know that the editorial board of 'Vidyawarta' has selected your Research Paper entitled " **शौनकोपनिषद्में प्रणवोपासना** "

Your paper was found to be original. Your paper will be published in **Issue-07, Vol-02.** Which will be published on **30 July 2014.** A copy of the printed Issue will be sent to you by Registered Post.

Thank you for sending your valuable writing for VIDYAWARTA.

Editor

Dr.Gholap Bapu Ganpat
C/o.Shivajirao Deshmukh
Snehanagar, PARLI-VAIJNATH
Dist.Beed 431515(M.S.)

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

IMPACT FACTOR 3.102

North Maha. University,
Jalgaon. Approved, जा.. .उमवि/२१/
इ.अ.मं./३९३/२०१३, Dt.२१.१०.२०१३

Indexed

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta™

Issu-VI, Vol-III, April. to June. 2014

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

Scanned by CamScanner

|| अनुक्रमणिका ||

1) सौन्दरनन्द महाकाव्य में दर्शन
Dr. Manju Gupta,Ballabgarh || Pg.08

2) कथा सतीसर उपन्यास में व्यक्त आतंकवाद - एक अध्ययन
प्रा. माने गणपत श्रीपतराव , लातूर || Pg.10

3) साठोत्तर हिन्दी नाटकों में स्त्री वोध
डॉ. गोपीराम शर्मा, श्रीगंगानगर (राजस्थान) || Pg.12

4) क्रिया विवेचनम्
ललित प्रधान आर्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली || Pg.14

5) संन्यस्तजीवनपरिचय
मायाबेन रमणभाई परमार, अहमदाबाद (गुजरात) || Pg.17

6) आधुनिक समय में वेदों का महत्त्व
भारत कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली || Pg.19

7) आत्मा का स्वरूप : कुन्दमुन्दाचार्य के मत में
खुशबु कुमारी जैन, तिमारपुर, दिल्ली || Pg.22

8) महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम
डॉ० बाबूलाल राम, आरा || Pg.24

9) गुण में गुण की कल्पना पर विचार (नसनप्रसादिनी के सन्दर्भ में)
राजेन्द्र कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली || Pg.27

10) नागार्जुन द्वारा प्रमाणवाद का खंडन (विग्रह-व्यावर्तनी के परिप्रेक्ष्य)
मोनिका शिवहरे, दिल्ली || Pg.29

11) चार्वाक दर्शन के नीतिशास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन
विभा रानी,गोरखपुर (उत्तरप्रदेश) || Pg.36

12) भिलाई विधानसभा चुनाव २००८ के संदर्भ में मतदाताओं की वैचारिक पृष्टभूमि
सलिता पटेल, दुर्ग (छ.ग.), प्राचार्य डॉ मेश्राम, डोंगरगढ (छ.ग) प्राचार्य, डॉ.सूर्यवंशी || Pg.43

13) बौद्ध साहित्य में आहार सम्बन्धी अवधारणा
श्रीमती रावत एन. || Pg.46

Scanned by CamScanner

अन्तर नहीं है। केवल परिस्पन्द और अपरिस्पन्द के रूप में तथा विशेष और सामान्य के रूप में दोनों में भेद है।[21]

(Footnotes)

1 सर्वाणि नामानि आख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्त समयश्च। नि. 1.12

2 त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायते इति शाकपूणि:। नि. 7.14

3 प्रथमपुरुजैश्चाख्यातस्य। नि. 7.1

4 अज़्टा. 1.3.1

5 सर्वाणि नामानि आख्यातजानि इति शाकटा यनो नैरुक्तसमयश्च। नि. 1.12

6 काशिका 1.3.1

7 लघुमञ्जुज़ा- पृ 544

8 कारकाणां प्रवृत्तिविशेष: क्रिया। महाभाज़्य 1.3.1

9 इह सर्वेजु साधनेजु सन्निहितेजु कदाचित्पचतीत्येतद् भवति, कदाचिन्न, भवति। यस्मिन् सन्निहिते पचतीत्येतद् भवति सा नूनं क्रिया। अथवा यथा देवदत्त इह भूत्वा पाटलिपुत्रे भवति, सा नूनं क्रिया। म.भा. 1.3.1

10 वैयाकरणभूज़णसार, धात्वर्थनिर्णय।[11]वही

12 महाभाज़्यप्रदीप 3.1.87

13 पदमञ्जरी 3.1.1

14 परमलघुमञ्जूज़ा, धात्वर्थनिरुपण

15 क्रिया नामेयमत्यन्तापरिदृष्टाऽशक्या पिण्डीभूता निदर्शयितुं यथा गर्भो निलुण्ठित इति। महाभाज़्य 1.3.1

16 षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणि:। जायते स्ति विपरिणमते वर्द्धतेऽपक्षीयते विनश्यतीति। निरुक्त 1.2/3

17 वैयाकरणभूज़णसार, धात्वर्थनिर्णय 15

18 भाववचनो धातु:।

19 परिस्पन्दापरिस्पन्दरुपतया क्रियाभावयोर्भेदेनोपन्यास:। महाभाज़्यप्रदीप 3.1.87

❖❖❖

05

संन्यस्तजीवनपरिचय

मायावेन रमणभाई परमार
पी.एच.डी. कार्यकर
धोलका. जि. अहमदाबाद (गुजरात)

● संन्यास का अर्थ :

सर्वस्व का त्याग यानि संन्यास। संन्यास का व्युत्पूद्गिगत अर्थ होता है

सम् + नि + आस् धातु अर्थात सम्यकतया छोड देना । ईशोपनिषद में कहा है कि –

'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद धनम् ' ।। (ईशावास्योपनिषद – १)

अर्थात् ईश्वर को साक्षी बनाकर जगत का त्याग करके उसका भोग कीजिए । जब मनुष्य अपने वर्णाश्रम के सारे कर्तव्यो का पालन करने के बाद गहनसोच के परिणाम से यह जान जाता है कि जगत अस्थिर है और संसार के त्रिविधदु:खो सें मुक्ति पाने के लिये सूद्गा, संपति और यश ईत्यादि का त्याग आवश्यक है,तब मनुष्य सर्वस्व का त्याग करके आद्यात्मिक-जीवन की और प्रेरित होता है । वहअंतिम सत्य, शाश्वत-जीवन और परमात्माकी खोज करनें को निकल पडता है ।

संन्यास हिन्दुधर्म की विशिष्ट देन है। 'कर्मणा न्यास: इति सन्यास: ।' अर्थात् कर्ममात्रका त्याग करना उसका नाम संन्यास । याज्ञवल्कयमुनि ने कहा है कि –

वनाद् गृहात् वा कृत्वेष्टिं सार्ववेदसदक्षिणाम् ।
प्राजापत्यां तदन्ते तान् अग्नीन् आरोह्यय चात्मनि ।।
अधीतवेदो जपकृत पुत्रवान् अन्नदोऽग्निमान् ।
शक्त्या च यज्ञकृन्मोक्षे मन: कृयाद्गु नान्यथो ।।
(यतिधर्म : ५६/५७)

अर्थात् गृहस्थ वनमें रहे या घरमें रहे पर उसने संन्यास लेने का निर्णयकिया होता तो चारों वेदो के ब्राह्मणो द्वारा यज्ञहोम करवा के व्रत करके चारों अग्नियो को धारण करके प्रवज्या

Scanned by CamScanner

लें। यज्ञ करने को असमर्थ हो तो जप करके अन्नदान करे। बाद में केवल मोक्ष प्राप्ति में मन लगाना चाहिये। (संन्यास लेना चाहिये) जाबालश्रुति में भी कहा है कि –

'यदी चेतरथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद गृहाद्वा वनाद् वा।

अथ

पुनरव्रती वा स्नातको वा अस्नातको वा उत्सन्नाग्निको वा

यदहरेव विरजेद्गादहरेव प्रवजेत्।'

(जाबालोपनिषत् : ४)

अर्थात् यदि तीन आश्रमों को पार न करना हो तो ब्रह्मचर्याश्रम से हीसीधा संन्यासाश्रम ग्रहण करे अथवा गृहाश्रम या वानप्रस्थाश्रम के बाद। ब्रह्मचर्य केपूर्व ब्रह्मचर्यव्रत स्नातक या अस्नातक हो या अग्नितर्पण रहित हो या सहित हो जब

जीस क्षण वैराग्य उत्पन्न हो तब उसी क्षण प्रवज्या (त्यागाश्रम) का स्वीकार कर शकते है।

• संन्यासी के भेद :

हारीतश्रुति में कहा है कि –

कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयक:।

चतुर्थ: परमो हंसो यो य: पश्यात्स उद्गाम: ॥

अर्थात् कृटीचक, बहूदक, हंस और परमहंस यह चार संन्यासी के भेद है। इसमें चोथा भेद परमहंस को श्रेष्ठ संन्यासी माना जाता है।

(१) कुटीचक : जो कुटीयाँ में रहेता हो। त्रिदंड, जनोई और शिखा धारण करता हो और जो अपने घर में ही भोजन लेता हो उस संन्यासी को कुटीचक कहेते है।

(२) बहुदक : जो अपने परिवार को छोडकर सात घरों में भिक्षा मांगता हो उस संन्यासी को बहुदक कहेते है। यह कुटीचक के जैसा ही वेशधारी होता हैं।

(३) हंस : यह भी कुटीचक की तरह वेशधारी होता है। लेकिन यह एकदंड होता है। यह संन्यासी उपवीत, कपडे का टुकडा, दंड और कमंडल का परिग्रह करता है।

(४) परमहंस : यह एकदंडी संन्यासी हैं। जो शिखा, जनोई और संध्यादि नित्यकर्म का त्याग करता है।

• संन्यासी का कार्य :

संन्यासी का अंतिम लक्ष्य आत्मा की मुक्ति और जगत का कल्याण करना ही होता है। '**आत्मनो मोक्षार्थं जगतद्धिताय च**।' संन्यासी मानवजात का निस्वार्थ सेवक होता है। वह आत्मबल से शांति प्राप्त करके जगत में शांति फैलाने का प्रयत्न करता है। संन्यासी का जन्म ही '**बहुजनहिताय बहुजनसुखाय**' के लिये होता है। संन्यासी संसार का त्याग करके जगत को पायमाल होने से बचाता है। बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि पुरुष प्रजामें धर्म की नींव डालकर राष्ट्र के लिये प्रेरक बन गए हैं। जब कोई मनुष्य सांसारिक नश्वर विषयो का त्याग करता हैं तो लोग उसे पागल कहते है। लेकिन ऐसे ही मनुष्य समाज में संजीवनीरुप होते है।

सच्चा संन्यासी समाज में उर्ध्वगमन की भावना फैलाता है। '**उतिष्ठत जाग्रत प्राह्श्वयवरान् निबोधितान्**। अर्थात् उठो, जागो और ध्येयप्राप्ति तक लगे रहो। यह संन्यासी के जीवन का मंत्र होता है। ऐसे संन्यासी ही समाज में उन्नत जीवन और शाश्वत सत्य को प्रकाशित कर शकते है।

मार्कँण्डेय पुराण में सच ही कहा है कि –

संतो सङ्गो हि भेषजम्।

अर्थात् संतजनो का संग सभी आश्रमीयों के लिये अनुपम औषध है।

॥ अस्तु ॥

M.Phil, Ph.D.

प्रबंध का पुस्तक प्रकाशन

आप व्दारा लिखित M.Phil , एवं Ph.D. के प्रबंधों को आप पुस्तक रुप में छपवाना चाहते है तो आपके लिए स्वर्णिम अवसर हर्षवर्धन पब्लीकेशन व्दारा प्राप्त है | आपका प्रबंध हम ISBN नंबर के साथ प्रकाशित करते है | इसके अतिरिक्त हम विशेषांक, गौरव ग्रंथ, स्मृति ग्रंथ अदि का भी प्रकाशन करते है | यदि आप कोई भी कितांब प्रकाशित करना चाहते हो तो निम्नलिखित पते पर संपर्क करें |

हर्षवर्धन पब्लीकेशन प्रा.लि. , परली वै जि. बीड

(महाराष्ट्र) भ्रमणध्वनि :

०७५८८०५७६९५/ vidyawarta@gmail.com

Scanned by CamScanner

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu g.Gholap
+9198 50 20 32 95
+9175 88 05 76 95

Managing Director
Ghodke Archana
vidyawarta@gmail.com
harshwardhanpubli@gmail.com

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Ref.No. Accept/Apr 2014/ 173

Date : 22/ /04 /2014

To,

मायाबेन रमणभाई परमार

पी.एच.डी. कार्यकर

धोलका. जि. अहमदाबाद **(गुजरात)**

Subject : Regarding the Selection of Research Paper for VIDYAWARTA.(ISSN 2319 9318) (Impact factor 3.102)

R/ Sir/Madam,

We are very glad to make you know that the editorial board of 'Vidyawarta' has selected your Research Paper entitled " **संन्यस्तजीवनपरिचय** "

Your paper was found to be original. Your paper will be published in **Issue-06, Vol-03.** Which will be published on **30 April 2014.** A copy of the printed Issue will be sent to you by Registered Post.

Thank you for sending your valuable writing for VIDYAWARTA.

Editor

Dr.Gholap Bapu Ganpat
C/o.Shivajirao Deshmukh
Snehanagar, PARLI-VAIJNATH
Dist.Beed 431515(M.S.)

Govt. of India.
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

IMPACT 3.102 FACTOR

North Maha. University,
Jalgaon. Approved, जा., .उमवि/२१/
इ.अ.मं./३९३/२०१३, Dt.२१.१०.२०१३

Indexed

Scanned by CamScanner

International Journal of Multi Disciplinary

HESMA

ISSN : 2319-5959

Journal of

Humanities Health Education Social science, Sports Medical Multidiciplin & All Subjects

Volume-2 Issue-4 April -2014

सर्वज्ञानमयो हि सः ।

Humanity Health

Education

HESMA

Social science Sports

Medical Multidiciplin

All Subjects

Scanned by CamScanner

A Research Journal of
Health Humanities Education Social science Medical & All Subjects

No. 4
April-2014

INDEX

1 THE PHILOSPHY OF SHRI SWAMINARAYAN AND THE UPNISHADS — 3
- Dr. Rajkumar S. Topandasani

2 MENTAL HEALTH AND ITS RELATION WITH BODY — 6
-Dr. P.V.Chaudhari

3 HEALTH BENEFITS OF FUNCTIONAL FOODS — 8
- Dr. Varsha Patel

4 SPORTS AUTHORITY OF GUJARAT DEPARTMENT OF ATHLETICS JUMPER'S IDENTIFICATION & ADVANCE TRAINING PROGRAMME — 11
-DR. MANSUKH TAVETHIYA

5 IMPORTANCE OF ANOVA TESTING IN RESEARCH IN COMMERCE : AN ANALYTICAL APPROACH — 13
-PROF. SUNIL B. TRIVEDI, PROF. MEHUL R. PATEL

6 SPORTS SCIENCE — 16
- PARMAR LAXMANBHAI K.

७ राजनीति — १८
- डॉ. आनंदकुमार के. चौहाण

८ परसाई के व्यंग्यो में राजनीति — २०
-डॉ. लविन्द्रसिंह आर. लबाना

९ दिशाहिन दलित समाज — २२
-गिरीश वी. वणकर

૧૦ પસ્તીનાપુરે : હાસ્યકૃતિની સમીક્ષા — ૨૪
- ડૉ. હરિભાઈ એલ. વાળા

૧૧ વેદકાલીન સામાજિક સ્થિતિ — ૨૭
-ડૉ. એલ. એમ. પાનસેરિયા

૧૨ મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી અને પ્રકાશિત ગ્રંથો — ૩૦
-ડૉ. દિનેશ જે. ડોડીયા

૧૩ ફૂટબોલની રમતમાં કીકીંગ કૌશલ્યનું મહત્ત્વ અને ઉપયોગ — ૩૩
-રાઠવા સેવલાભાઈ જી.

૧૪ શ્રીમદ ગીતાજીમાં આપેલ માનવજીવનનો મુખ્ય -ગૌણ સિધ્ધાંત — ૩૫
-પરમાર અજીતસિંહ રંગીતસિંહ

૧૫ પ્રાચીન પદ્ધતિ મુજબ શિશુ - સંભાળ — ૩૭
- માયાબેન રમણભાઈ પરમાર

Scanned by CamScanner

પ્રાચીન પદ્ધતિ મુજબ શિશુ - સંભાળ

માયાબેન રમણભાઈ પરમાર
પી. એચ. ડી., કાર્યરત, પોલીસ લાઇન, રૂમ નં. ૪૩, ધોળકા
તા. ધોળકા. જી. અમદાવાદ
Email : mayaben.parmar@yahoo.com મો. ૯૫૧૦૫૮૪૭૩૬

જીવ માત્રને સુખ ગમે છે, દુ:ખ કોઈને ગમતું નથી બધા સુખમાં પહેલું સુખ છે પોતાનું આરોગ્ય. 'પહેલું સુખ તે જાતે નર્યા' પરંતુ ૨૧મી સદીમાં જીવતા મનુષ્યોએ પોતાના સ્વાસ્થ્યને ભૂલી માત્રને માત્ર પૈસા પાછળ આંધળી દોટ મૂકે છે. તેનું કારણ કદાચ આ કારમી મોંઘવારી પણ માની શકાય. મોંઘવારી રૂપી રાક્ષસ સામે ટકી રહેવા આજે સ્ત્રી - પુરુષ બંન્નેએ મળીને આવકોપાર્જન માટે પ્રયત્નો કરવા પડે છે. પરિણામે આવા દોડભાગ ભર્યા જીવનમાં એક સ્ત્રી જ્યારે પોતાના સ્વાસ્થ્ય માટે પણ સમય ફાળવી શકતી નથી તેવા સમયમાં નારી પોતાના નવજાત શિશુની સંભાળ કેવી રીતે રાખે તે એક પડકાર છે. કારણ કે બાળક અજ્ઞાન અને નિર્બળ હોવાથી પોતાના શરીરને કુશળ રાખી શકતો નથી. તે પોતાને ઉછેરનાર વ્યક્તિને આધીન રહે છે. પરિણામે બાળકની રાખેલ સંભાળ પ્રમાણે તે શરીરે સુખી અને દુ:ખી થાય છે. સર્વ પ્રાણિયોના આયુષ્યનો પ્રથમ ભાગ બાલ્યાવસ્થા છે. આ અવસ્થામાં જો તેનો ઉછેર કાળજી થાય તો સારા પાયા ઉપર ચણેલ મકાનની પેઠે તેઓ પોતાનું પૂર્ણ આયુષ્ય જો દૈવી વિઘ્ન ન આવે તો લાંબા સમય સુધી વિતાવી શકે છે.

શિશુની પ્રાથમિક સંભાળ :-

આપણે સર્વે જાણીએ છીએ કે નવજાત શિશુ માટે માનુ દૂધ એ ઉત્તમ આહાર છે કારણ કે જન્મથી માંડીને છ માસ સુધી બાળકની સંપૂર્ણ પોષણસંબંધી જરૂરિયાતો માત્ર માના દૂધથી જ સંતોષાય છે. તદુપરાંત માના દૂધમાં રહેલા પ્રોટીન (એન્ટીબોડી) ઘણી બધી જાતના ચેપો સામે રક્ષણ આપે છે. ગળાના ચેપથી માંડીને કમળા સુધીના અનેક રોગો સામે રક્ષણ આપવા માનું દૂધ સક્ષમ છે. આમ, છતાં આજની નોકરીયાત સ્ત્રીઓ બાળકને બાટલીનું દૂધ આપે છે. યુનિસેફના આંકડાઓ જણાવે છે કે માનું દૂધ પીનાર બાળક કરતાં બાટલીનું દૂધ પીનાર બાળકને ઝાડા ઉલટી થવાની શક્યતાઓ ૨૫% વધારે હોય છે અને મૃત્યુ થવાની શક્યતા ૧૫% વધારે હોય છે.

બાટલીનું દૂધ પીવાથી બાળકને જાતજાતના ચેપ લાગી શકે છે બાટલીમાનું દૂધ એક સાથે મોંમા આવી જવાથી ગળા અને કાન વચ્ચેની નળી ખૂલી જાય છે અને કાનમાં ચેપ લાગવાની શક્યતા વધી જાય છે. અન્ય દૂધ કે બેબીફૂડમાં વધુ પ્રમાણમાં હેવી મેટલ્સ (ભારે ધાતુઓ) હોવાથી બાળકની કિડનીને વધુ શ્રમ પડે છે. આર્સેનિક, કેડિયમ, સીસુ, તાંબુ, જસત, એલ્યુમિનિયમ વગેરે ધાતુઓનું પ્રમાણ બેબીફૂડમાં તથા અન્ય દૂધમાં વધારે હોવાથી બાળકની કિડની ઉપરાંત હાડકાઓને પણ નુકસાન કરે છે. તેથી દરેક માતાઓને આ વિનંતી છે કે તેઓ બાળકના સારા સ્વાસ્થ્ય માટે તેમને બે વર્ષ સુધી સ્તનપાન કરાવવું જરૂરી છે.

આમ, બાળકના સંભાળના પ્રાથમિક તબક્કામાં સ્તનપાનનું મહત્ત્વ ઘણું જ છે એ સર્વવિદિત છે. પરંતુ આપણે સર્વ એ વાતથી અજાણ છીએ કે બાળકને માટે કેવું ધાવણ ઉત્તમ છે તેનો સામાન્ય પરિચય 'ભાવ પ્રકાશ' નામના સંસ્કૃત ગ્રંથમાં જોવા મળે છે. જેમ કે :-

मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादय: स्त्रिया: ।
दूषयंति पयस्तेन शरीरे व्याधय: शिशो: ॥
(ભાવ પ્રકાશ પૂર્વખંડ, પ્રથમ ભાગ)

અર્થાત્ 'અહિત આહાર તથા વિહાર કરનારી સ્ત્રીના દૂધને દુષ્ટ થયેલા વાતાદિ દોષ દૂષિત કરે છે, તેથી બાળકના શરીરમાં રોગ થાય છે.

नीरे स्तन्यं यदेकी स्यादविवर्णमतंतुमत् ।
पांडुरं तनु शीतं च तगुग्धं शुद्धमादिशेत् ॥
(ભાવ પ્રકાશ પૂર્વખંડ, પ્રથમ - ભાગ)

અર્થાત્ 'જે દૂધ પાણી સાથે ભળી જાય, ખરાબ વર્ણ રહિત તંતુ વિનાનું, ધોળું, પાતળું, તથા ઠંડુ હોય, તે શુદ્ધ જાણવું, આ બંન્ને શ્લોક દ્વારા આપણને આ વાતનો ખ્યાલ આવે છે. કે કેવા દૂધને ઉત્તમ માનવું.

હવે પ્રશ્ન એ છે કે બાળકને સ્તનપાન કરાવનારી સ્ત્રી કેવા લક્ષણોથી યુક્ત હોવી જોઈએ. તે આપને 'ભાવ પ્રકાશ' ગ્રંથના પૂર્વખંડના પ્રથમ ભાગમાંથી લીધેલા આ બંન્ને શ્લોક દ્વારા જોઈશું.

पीताय यदि बालस्य विदध्यादुपमातरं ।
सुविचार्य गुणान्दोषान् कुर्याद्धात्रीं तदेदृशीम् ॥

અર્થાત્ 'કદી બાળકને ધાવવા માટે ધાવ (સ્તનપાન કરાવનારી સ્ત્રી) રાખવી હોય, તો તેના ગુણદોષ સારી રીતે વિચાર કરી, આપી રાખવી;

सुवर्णा मध्यवयसं सच्छीलांमुदिता सदा ।
शुद्धदुग्धां बहुक्षीरां कुलीनामतिवत्सलाम् ॥
स्वाधीनामल्पसंतुष्टां निजपुत्रद्दशं शिशौ ।

જેવી કે સારા વર્ણનવાળી, મધ્યમ વયની, સુશીલ, સદા પ્રસન્ન રહેનારી, શુદ્ધ તથા ઘણા દૂધવાળી, કુલીન બાળક ઉપર અતિ સ્નેહ રાખનાર, સ્વાધીન, થોડામાં સંતુષ્ટ તથા બાળકને પોતાના પુત્ર સમાન ગણનારી રાખવી; ધાવના લક્ષણો જાણ્યા પછી બાળકને કેવી રીતે સ્તનપાન કરાવવું તેનો નિર્દેશ આ શ્લોકમાં જોવા મળે છે.

बालमंके सुखं दध्यात्रचैनं तर्जयेत्कचित् ।
सहसा वोधयैत्रैव नायोग्यमुपवेशयत् ॥
(ભાવ પ્રકાશ પૂ. ખં. પ્ર. ભા)

'બાળકને સુખ થાય તે રીતે ખોળામાં લેવું ક્યારે પણ તરછોડવું નહિ. એકદમ જગાડવું નહિ ને અયોગ્ય સ્થાને બેસાડવું નહિ. આમ સ્નેહપૂર્વક સ્તનપાન કરાવવું. ત્યારબાદ છ માસ પૂર્ણ થતાં બાળકને સ્તનપાન સાથે સાથે અન્નપાન કેવી રીતે કરાવવું ?

Scanned by CamScanner

यथोक्तविधिना बालं मासि षष्ठेऽष्टमेऽपि च ।
अन्नं संप्राशयेत्किंचित्ततस्तदुर्धयन्क्रमात् ॥
(ભાવ પ્રકાશ પૂ. ખં, પ્ર. ભા)

'પછી બાળકને છઠ્ઠે અથવા આઠમા માસે ઘટતી રીતે કંઈક અન્ન ચટાડવું, ને પછી તે ક્રમથી વધારતાં ખવરાવતું જવું.'

આ થઈ બાળના આંતરિક પોષણની તથા સંબાળની વાત હવે બાળકના બાહ્ય સંભાળની વાત

अभ्यंगोद्धर्तनं स्नानं नेत्रयोरंजनं तथा ।
वसनं मृदु यत्रच्च पथ्यान्येतानि सर्वथा ॥
(ભાવ પ્રકાશ પૂ. ખં. પ્ર. ભા)

नाशुचौ विसृजेद्बालं नाकाशे विषमे न च ।
नोष्ममारुतवर्षेषु रजोधूमोदकेषु च ॥
(સુશ્રુતસંહિતા શારીરસ્થાન અ. ૧૦)

૧. તેને તેલ ચોળવું. (માલિશ કરવી)
૨. શરીર ચોળી નવરાવવું.
૩. આંખમાં આંજણ આંજવું.
૪. ઋતુ અનુસાર કોમળ વસ્ત્ર પહેરાવવા.
૫. બાળકને ગંદા સ્થાનમાં રહેવા દેવું નહિ.
૬. ઉંચે ઉલાળવું નહિ, વિષમ સ્થાને બેસાડવું નહિ.
૭. ઉના વાયુ, વર્ષાદ, ધૂળ, ધૂમાડા તથા પાણીમાં રહેવા દેવું નહિ.

આ ઉપરાંત બાળકના શારીરિક તથા માનસિક વિકાસમાં બાળકની પ્રસન્નતા ઘણો મહત્ત્વનો ભાગ ભજવે છે. તેથી બાળકને પ્રસન્ન રાખવું પણ જરૂરી છે.

रोदयेत् न क्वचित्कार्ये विधिमावश्यकं विना ॥
(ભાવ પ્રકાશ)

આવશ્યક કાર્યો વિના બાળકને રડાવવું નહિ તથા તેના ચિત્તને અનુસરવું, તેને સદા રાજી રાખવું.
(ભાવ પ્રકાશ)

આમ, આજના આધુનિક યુગમાં શિશુ ઉછેરમાં આપણે વૈજ્ઞાનિક ઢબની સાથે સાથે પ્રાચીન પદ્ધતિઓનો પણ સહારો લઈએ તો ઘણા ખરા અંશે બાળ વિકાસ દરમાં વૃદ્ધિ લાવી શકીએ તેમ છે.

अस्तु

Scanned by CamScanner

HESMA

ISSN : 2319-5959

International Journal of Multi Disciplinary

Certificate

This is to certify that the Research Article /Paper/ Case Study titled

પ્રાચીન પદ્ધતિ મુજબ શિશુ-સંભાળ

(Prachin Paddhati mujab Shishu-Sambhal)

Author : Parmar Mayaben Ramanbhai

Submitted by you published in

Month April Year 2014, Volume 2,

Issue 4 Page No. 37 in this

Open Access Peer Reviewed Refereed Jounal.

For further Information Please Visit

www.ramatjagat.com

Publisher
Hesma

Chief Editor
Hesma

Scanned by CamScanner

International Journal of Multi Disciplinary

HESMA

ISSN : 2319-5959

Journal of

Humanities Health Education Social science, Sports Medical Multidiciplin & All Subjects

Volume-2 Issue-6 June -2014

सर्वज्ञानमयो हि सः ।

Humanity Health

Education

HESMA

Social science Sports

Medical Multidiciplin

All Subjects

Scanned by CamScanner

INDEX

1	STRESS MANAGEMENT: STRESS AND SPORTS PERFORMANCE - Dr. Jaymal S. Naik	3
2	HARMFUL EFFECTS OF ALCOHOL & SMOKING - Shailesh kumar rathod, Dr. H. I. Vala	6
3	ROCK CLIMBING: TECHNIQUES AND PRINCIPLES -Yajuvendrasinh L Jethwa	7
4	GOAL SETTING: PSYCHOLOGICAL PREPARATION OF SPORTS COMPETITION -Bhavikkumar H Kantesariya	9
5	EFFECTS OF WALKING AND JOGGING PROGRAMME ON CARDIO VASCULAR ENDURANCE AMONG THE MIDDLE AGED MEN - SUTHAR PULKIT V.	11
6	PHYSICAL ACTIVITY, EXERCISE AND PHYSICAL FITNESS - DADHANIYA VIDHIN H.	14
7	A COMPARATIVE STUDY ON ANXIETY AMONG CHESS AND CARROM MALE PLAYERS OF VNSGU - SURAT - Manesh K. Patel	17
8	A COMPARATIVE STUDY ON PHYSICAL FITNESS AMONG DISTRICT LEVEL KABADDI AND KHO-KHO PLAYERS - JITENDRA P. PATEL	19
9	INFORMATION COMMUNICATION & TECHNOLOGY IN AUTOMATION OF LIBRARIES - PATEL HETAL HARIBHAI	21
10	WORK PARTICIPATION OF FEMALE AND EMERGING LABOUR LAWS IN INDIA - Yogini B Simpi	23
११	संस्कृत साहित्य में धर्मशास्त्र का विकास - माछी अनीलकुमार बाबुभाई	२७
૧૨	મહિલા સશક્તિકરણ: દશા અને દિશા -પ્રો. બલભદ્રસિંહ એસ. મંડોરા	૨૮
૧૩	વેદના સંદર્ભે માનવનો આનંદ - ડૉ. બી. એમ. પ્રજાપતિ	૩૦
૧૪	ઈલા આરબ મહેતા કૃત- બત્રીસ પુતળીની વેદના - નવલકથામાં નારી સંવેદના -એક અભ્યાસ - પટેલ નરેન્દ્રકુમાર એ.	૩૨
૧૫	મહાભારતના આરણ્યક પર્વના આખ્યાનોનો માનવ સંદેશ - પરમાર અજીતસિંહ રંગીતસિંહ	૩૫
૧૬	ગુણ-કર્માનુસાર વર્ણવિભાગ -પરમાર માયાબેન રમણભાઈ	૩૬
૧૭	શ્રીમચ્છંકરાચાર્ય રચિત તત્વબોધમાં કેવલાદ્વૈત સિદ્ધાંત નિરૂપણ - નરેશ જી. વણઝારા	૩૮
૧૮	ગુજરાત રાજ્યના રાહબરોની સામાજિક-આર્થિક સ્થિતિ અને સિદ્ધિનો અભ્યાસ - પ્રો. આર. કે. કુરેશી	૪૨
૧૯	નટવરલાલ મોહનલાલ રાવલ (સ્વાતંત્ર્ય સેનાની) (૧૯૧૯-૧૯૮૦) - મેહુલ યુ. ઠાકોર	૪૪
૨૦	રાષ્ટ્રીય કક્ષાના કરાટે, જૂડો અને કુસ્તી રમતના ખેલાડીઓના શરીરઅંગ પરિમિતિનો તુલનાત્મક અભ્યાસ. - ગૌરવ કુ. ઠાકોર	૪૬

Scanned by CamScanner

A Research Journal of
Health Humanities Education Social science Medical & All Subjects
No. 5
June-2014

ગુણ-કર્માનુસાર વર્ણવિભાગ

પરમાર માયાબેન રમણભાઈ
એમ.એ., એમ.ફીલ. સ્લેટ, પી.એચ.ડી. કાર્યરત
પોલીસ લાઈન રૂ. નં. ૪૩ ધોળકા, અમદાવાદ

૨૧ મી સદીમાં જીવતો મનુષ્ય આધુનિક વિચારસરણી ધરાવે છે. પરંતુ જ્યારે જાતિની વાત આવે ત્યારે ઊંચ-નીચનાં ભેદભાવરૂપી કાદવમાં ગોથા મારે છે ને પ્રમાણ તરીકે શાસ્ત્રોનો આધાર આપતા કહે છે કે ભગવાને પોતે આ ભેદભાવ ઉત્પન્ન કર્યો છે જેમ કે-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू: राजन्य: कृत ।
उरू तदस्य यद्वैश्य : पद्भ्यां शुद्रो अजायत ॥

(ऋग्वेद १०.९०.१२)

અર્થાત્ વેદપુરુષનાં મુખમાંથી બ્રાહ્મણ બાહુમાંથી ક્ષત્રિય, જાંઘમાંથી વૈશ્ય તથા પગમાંથી શુદ્ર ઉત્પન્ન થયા. તેવી જ રીતે –

चातुवर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागश- ।

(શ્રી. મ. ગીતા ૪-૧૩)

અર્થાત્ 'ગુણો અને કર્મોના વિભાગ કરીને મેં ચાર વર્ણો (બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, શુદ્ર) નું સર્જન કર્યુ છે.'

હવે ઉપરોક્ત ઋગ્વેદમંત્ર તથા ગીતાના શ્લોકનો બરાબર વિચાર કરીએ તો એક તથ્ય સામે આવશે કે અહીં જે વર્ણવિભાગ આપેલ છે. તેનો આદાર 'કર્મ' છે. જેમકે અધ્યયન-અધ્યાપન કાર્ય કરે તે બ્રાહ્મણ રક્ષણ કરે તે ક્ષત્રિય ખેતી-વેપાર-પશુપાલન કરે તે વૈશ્ય તથા આ ત્રિવર્ણની સેવા કરે તે શુદ્ર. પરંતુ કેટલાક અલ્પમતિવાળા મનુષ્યો આ વર્ણવિભાગને 'જન્મ' સાથે જોડીને ઊંચનીચના ભેદભાવ ઊભા કરતા જોવા મળે છે. તેઓ માને છે કે બ્રાહ્મણનાં ઘરે જન્મે તે બ્રાહ્મણ કહેવાય. તેવી જ રીતે ક્ષત્રિયનો વંશ જ ક્ષત્રિય, વૈશ્યનો વંશજ વૈશ્ય તથા શુદ્રનો વંશજ શુદ્ર કહેવાય. આમ, કર્મના સ્થાને જન્મને પ્રાધાન્ય આપીને વર્ણવિભાગ કરી ઊંચનીચનાં દૂષણને ફેલાવવામાં આવે છે. 'મેરા ભારત મહાન' કહેવા માત્રથી આપણા દેશની મહાનતા સિદ્ધ નથી થતી. વિશ્વમાં આપણા ભારત દેશને મહાન સિદ્ધ કરવો હશે તો સમાજમાં રહેલા દહેજ, સ્ત્રીભ્રૂણ હત્યા, જાતિવાદ, ઊંચનીચ જેવા અનેક દૂષણોને દૂર કરવા પડશે. વિશ્વમાં આપણા દેશની અસ્મિતા જાળવવા માટે ઊંચનીચનાં ભેદભાવો દૂર કરી એકજૂથ બની આગળ વધવું પડશે. આમ, કર્મ અનુસાર પાડેલ વર્ણવિભાગને સમજવા કર્મને પણ સમજવું જરૂરી છે. મનુષ્ય ત્રણ ગુણોનો બનેલો છે. સત્વ, રજસ, તમસ, માટે તેના કર્મો પણ આ ગુણને આધારે થાય છે.

नियतं सङ्गरहितम् अरागद्वेषतः कृतम ।
अफलप्रेत्सुना कर्म यत्तत्साित्त्वकमुच्यते ॥

(ગીતા – ૧૮/૨૩)

અર્થાત્ નિયમિત રીતે અભિમાન રહિત થઈને રાગદ્વેષ છોડીને ફળની ઈચ્છા રાખ્યા વગર નિષ્કામપણે જે કર્મ કરવામાં આવે છે તે સાત્વિક ધર્મ છે. વળી, આ કાર્ય હું જ કરી શકું. એવા અહંકારપૂર્વક અને તેના માટે ખૂબ કામ કરે તે રાજસકર્મ છે જે કર્મ કરાવામાં શક્તિનો ધનનો દુર્વ્યય થાય,સ હિંસા ને પરપીડા થાય. પોતાનું સામર્થ્ય જાણ્યા વગર, વિચાર વિના, અવિવેકપૂર્ણ કર્મ કરે તેને તામસકર્મ કહે છે. આ ત્રણ કર્મોનું ભગવાન વેદવ્યાસે ભીષ્મપર્વ (૪૨/૪૧) માં વિસ્તૃત વર્ણન છે.

ब्राह्मण-क्षत्रिय-विशां-शुद्राणां च परंतप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैगुणै : ॥

(મ.ભા.ભી.પ. ૪૨/૪૧)

મહાભારતમાં આવતા આ શ્લોકની 'નીલકંઠી' ટીકામાં આચાર્ય નીલકંઠ લખે છે કે – 'સ્વભાવજન્ય ગુણો વડે બ્રાહ્મણ-ક્ષત્રિય-વૈશ્ય અને શુદ્રોના કર્મનો વિભાગ થયો છે. પણ માત્ર જ્ઞાતિ-જાતિજન્ય ગુણોથી નહિ, કારણ કે જાતિથી બ્રાહ્મણ એવા દ્રોણાચાર્ય વગેરેમાં ક્ષત્રિયનું શોર્ય હતું. તો ભરત વગેરે રાજાઓ ક્ષત્રિય હોવા છતાં તેમનામાં શમ-દમ-તિતિક્ષા વગેરે બ્રાહ્મણના ગુણો હતા. આમ, જે કોઈ વર્ણમાં શમાદિ ગુણો દેખાય તે શુદ્ર હોવા છતાં આ લક્ષણોથી એને બ્રાહ્મણ જ જાણવો. અને જે જાતિએ બ્રાહ્મણ હોવા છતાં તેમાં શુદ્ર ધર્મ દેખાય તો તે શુદ્ર જ છે. આ વાતના સમર્થનમાં એવા ઘણા શાસ્ત્ર વચનો છે. જેનાથી સિદ્ધ થાય છે કે મનુષ્યની જાતિ-વર્ણ તેના જન્મથી નહિ પરંતુ તેના કર્મ-સ્વભાવથી સિદ્ધ થાય છે. આવા શાસ્ત્રવચનો નીચે મુજબ છે :

૧. सद्गुणो ब्राह्मणो वर्णः क्षत्रियस्तु रजोगुण : ।
तमोगुणस्तथा वैश्यो गुणसाम्यातु शुद्रता ॥

– બ્રાહ્મણ સત્વગુણવાળો, ક્ષત્રિય રજોગુણવાળો ને વૈશ્ય તમોગુણવાળો હોય છે. જેનામાં ત્રણે ગુણ સરખા પ્રમાણમાં હોતે શુદ્ર હોય છે.

(ભવિષ્યપુરાણ : ૩-૪-૨૩)

૨. सत्त्वाधिको ब्राह्मण:स्यात् क्षत्रियस्तु रजोधिक:
तमोधिको भवेद् वैश्यो गुणसाम्यातु शुद्रता ॥

– બ્રાહ્મણમાં સત્વગુણ, ક્ષત્રિયનાં રજોગુણ ને વૈશ્યમાં તમોગુણ અધિક હોય છે. જ્યારે શુદ્રમાં ત્રણેગુણ સરખા હોય છે.

(મહાભારત)

૩. शुद्रयोनौ हि जातस्य सद्गुणानुपतिष्ठत :
वैश्यत्वं भवति ब्रह्मन् क्षत्रियत्वं तथैव च ।
आर्जवे वर्तमानस्य ब्राह्मण्यमभिजायते ॥

– શુદ્ર યોનિમાં જન્મેલો માણસ જો સદ્ગુણનું અનુશીલન કરે તો, હે બ્રાહ્મણ! તે વૈશ્ય બને છે, તે ક્ષત્રિય પણ બને છે અને સરળ વર્તન રાખે તો બ્રાહ્મણપદને પામે છે.

(મહાભારત વનપર્વ : ૨૧૬, ૧૧-૨)

૪. न जातिः कारणं तात गुणाः कल्याणकारणम् ।
वृत्तस्थमपि चाण्डालं तं देवा ब्राह्मणं विदु : ॥

– હે વત્સ અમુક જાતિમાં જન્મ લેવાથી કલ્યાણ થતું નથી. સદ્વર્તન

કરનાર ચાંડાલ હોય તો પણ તેને દેવો બ્રાહ્મણ માને છે.

(શુક્રનીતિ : ૧/૩૮)

(મહા. અનુશાસનપર્વ ૧૪૩/૪૯)

૫. सर्वोऽयं ब्राह्मणो लोके वृत्तेन तु विधीयते ।
वृत्ते स्थितस्तु शुद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं नियच्छति ॥

- જગતમાં બ્રાહ્મણમાત્ર સદ્વર્તન વડે બ્રાહ્મણ થાય છે. સદ્વર્તન કરનાર શુદ્ર પણે બ્રાહ્મણત્વ પામે છે.

(મહા. અનુશાસનપર્વ ૧૪૩/૫૦)

૬. शुद्रोऽपि शीलसंपन्नो ब्राह्मणदधिको भवेत् ।
ब्राह्मणो विगताचारः शुद्राद्धीनतरो भवेत् ॥

- શુદ્ર પણ શીલવાન હોય તો બ્રાહ્મણ કરતા ચડિયાતો છે. બ્રાહ્મણ જો અનાચારી હોય તો શુદ્રથી હલકો છે.

(ભવિષ્યપુરાણ : ૧-૪-૩૧)

૭. न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियो वैश्य हव वा ।
न शुद्रो न च वै म्लेच्छो भेदिता गुणकर्मभि : ॥

- બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, શુદ્ર ને મ્લેચ્છ જન્મથી થતા નથી એ વિભાગ તો ગુણકર્મ અનુસાર પાડેલા છે.

૮. जातो व्यासस्तु कैवर्त्या : श्वपाक्याश्चपराशर : ।
शुक्यां शुकः कमादाख्यस्तथोलूक्याः सुतोऽभवत् ॥
हरिलीगर्भसम्भूत ऋष्यश्रृङगो महामुनि : ।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारास्तेन कारणम् ॥
गणिका गर्भसम्भूतो वसिष्ठश्च महामुनि : ।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारास्तेन कारणम् ॥

વ્યાસમુનિ માછણના, પરાશરમુનિ ચાંડાલીના, શુક શુકીના, ને કણાદમુનિ ઉલૂકીના દીકરા હતા. હરિણીનાં પેટે જન્મેલા મહામુનિ ઋષ્યશ્રૃંગ તપ વડે બ્રાહ્મણ થયા હતા. ગણિકાના પેટે જન્મેલા મહામુનિ વશિષ્ઠ તપ વડે બ્રાહ્મણ થયા હતા. એટલે સંસ્કાર પરથી જ વર્ણ નક્કી થાય છે.

(ભવિષ્યપુરાણ : ૧/૪૨/૨૨, ૨૬, ૨૯)

આમ ઉપરોક્ત શાસ્ત્રોક્ત વચનોથી સમજી શકાય છે કે ધર્મના નામે આજે લોકો ઊંચનીચના ભાવો ઉત્પન્ન કરે છે તે તદ્દન ખોટા છે માટે જન્મને નહિ પણ કર્મને મહત્વ આપી નાત-જાતના ભેદો દૂર કરી ભાઈચારામાં એકસૂત્ર બની દેશને મજબૂત બનાવીએ.

Scanned by CamScanner

HESMA

ISSN : 2319-5959

International Journal of Multi Disciplinary

Certificate

This is to certify that the Research Article /Paper/ Case Study titled

ગુણ - કર્માનુસાર વર્ણ-વિભાગ

(Gun - karmanusar Varn - vibhag)

Author : Parmar Mayaben Ramanbhai

Submitted by you published in

Month June Year 2014, Volume 2,

Issue 6 Page No. 36 in this

Open Access Peer Reviewed Refereed Jounal.

For further Information Please Visit

www.ramatjagat.com

Publisher
Hesma

Chief Editor
Hesma

Scanned by CamScanner

International Journal of Multi Disciplinary

HESMA

ISSN : 2319-5959

Journal of

Humanities Health Education Social science, Sports Medical Multidiciplin & All Subjects

Volume-2 Issue-5 May -2014

सर्वज्ञानमयो हि सः ।

Humanity Health

Education

HESMA

All Subjects

Social science Sports

Medical Multidiciplin

Scanned by CamScanner

A Research Journal of
Health Humanities Education Social science Medical & All Subjects
No. 5
May-2014

INDEX

1 A STUDY OF THE POLYTECHNIC COLLEGE LIBRARY COLLECTION DEVELOPMENT, SERVICES AND USER SATISFACTION 3
- PATEL HETAL HARIBHAI

2 EFFECT OF YOGASANAS ON CARDIOVASCULAR ENDURANCE AND FLEXIBILITY AMONG POST GRADUATE STUDENTS 5
- Mr.Yogeshkumar L. Chaudhari-

૩ ભારતમાં રમતગમત અને રાજકારણ ૭
–ડૉ. હરીશ એમ. દેસાઈ

૪ દર્શન, ધર્મ અને વિજ્ઞાનનો સમીક્ષાત્મક દ્રષ્ટિકોણ ૧૦
– ડૉ. ભીખાભાઈ એમ. પ્રજાપતિ

૫ આલોક પરલોકમાં હાસ્ય ૧૨
– ડૉ. હરીભાઈ એલ. વાળા

૬ રમત ગમતમાં આહારનું મહત્વ ૧૭
– પ્રા. ડો. ભરતભાઈ એમ. પટેલ

૭ અમૃત વરસે નેણની સમીક્ષા ૧૯
– પ્રા. કરશનભાઈ આર. બારડ

૮ શ્વેતાશ્વરોપનિષદમાં રહેલું તત્ત્વજ્ઞાન ૨૧
– માયાબેન રમણભાઈ પરમાર

૯ ફૂટબોલની રમતના મૂળભૂત નિયમો ૨૩
– રાઠવા સેવલાભાઈ જી.

૧૦ અપૂરતું પોષણ : બાળસ્વાસ્થ્યનું અવરોધક ૨૫
– ભારતી ગાંવીત

Scanned by CamScanner

શ્વેતાશ્વરોપનિષદમાં રહેલું તત્ત્વજ્ઞાન

માયાબેન રમણભાઈ પરમાર
(પી.એચ.ડી. કાર્યરત) ધોળકા
તા. ધોળકા, જી. અમદાવાદ મો. ૯૫૧૦૫૮૪૭૩૬

सर्वोपनिषद गावो दुग्धा गोपालनंदनः । આ ઉક્તિ અનુસાર 'ગીતાના અમૃત સ્વરૂપ દુધને આપનારી ગાયો એટલે ઉપનિષદ' એ સર્વવિદિત છે. સાદી ભાષામાં કહીએ તો વાદ કે વિવાદ નહી પરંતુ સર્વ-સુંદર-સંવાદ એટલે ઉપનિષદ.

સામ્પ્રત ૧૦૮ જેટલા ઉપનિષદો પ્રચલિત છે જેમાં દશ ઉપનિષદોને પ્રધાન માનવમાં આવે છે જેમ કે -

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः ।

ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश ॥

આ મુખ્ય દશોપનિષદ પછી આવતું અગીયારમું ઉપનિષદ એટલે શ્વેતાશ્વરોપનિષદ જેનો સંબંધ કૃષ્ણ યર્જુવેદ સાથે છે. આમા ૭ અધ્યાય તથા કુલ મળીને ૧૧૩ મંત્રો છે. આ ઉપનિષદની વિશેષતા એ છે કે આમાં એ યુગના જુદા જુદા દશ દાર્શનિક મતોની સૂચિ આપવામાં આવી છે જે આ મુજબ છે. (૧) બ્રહ્મવાદ (૨) કાળવાદ (૩) સ્વભાવવાદ (૪) નિયતિવાદ (૫) ભૂતવાદ (૬) યોનિવાદ (૭) પુરુષવાદ (૮) એતત્સંયોગવાદ (૯) આત્મવાદ (૧૦) દેવવાદ.

- **શ્વેતાશ્વતરોપનિષદનું સમીક્ષાત્મક વર્ણન :-**

આ ઉપનિષદના પહેલા અધ્યાયના મંત્ર ૬ થી ૧૬ સુધી બ્રહ્મતત્વનું વિવેચન છે. આથી આ ઉપનિષદને 'બ્રહ્મોપનિષદ' પણ કહેવાય છે. આ સૃષ્ટિમાં ક્ષર-અક્ષર, વ્યક્ત-અવ્યક્ત, ઈશ-અનીશ, જ્ઞાની-અજ્ઞાની, પ્રકૃતિ-પુરષ, જીવાત્મા-પરમાત્મા, બંધ મોક્ષ, ભોક્તા-ભોગ્ય વગેરે અનેક દ્વંદ્વ ભાવોને એકઠા કરીને પ્રજાપતિએ આ વિશ્વની રચના કરી છે. જેમ બે અરણિકાષ્ઠના મંથનથી અગ્નિ ઉત્પન્ન થાય છે તેમ આ ભૌતિક શરીરથી પ્રણવ (ॐ) નો જપ કરવાથી પરમારત્મસ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરી શકાયછે. આ આત્મવિશ્વાસનું મૂળ 'તપ'છે.

આ ઉપનિષદના બીજા અધ્યાયના ૧૭ મંત્રોમાં ધ્યાન અને યોગના અનુષ્ઠાન ઉપર વધારે ભાર આપ્યો છે. આ સવિતાદેવનો 'સવ' અર્થાત્ 'મૂર્ત' દ્રવ કહેવામાં આવ્યું છે. અહીં વિશ્વની રચના કરનાર બ્રહ્મને વેદોનો બૃહત વિપ્ર કહેલ છે. આ દેવનો મહિમા સર્વથી અધિક છે. તે જ સર્વ વયુન અર્થાત્ પદાર્થોનો જ્ઞાતા છે. આ દેવ સમસ્ત ભુવનો તથા અગ્નિ વગેરે દેવોમાં તથા ઔષધિઓ અને વનસ્પતિઓમાં પણ તેનું જ અસ્તિત્વ છે. તે જ સદા પ્રણામને યોગ્ય છે.

ત્રીજા અધ્યાયમાં ૨૧ મંત્રો છે. અહિં દેવને સંસારરૂપી ઝાળા બાંધનારો કહ્યો છે. અર્થવવેદમાં આ વિશ્વને 'શક્રજાલ' કહ્યું છે. હાથીના મોટા શરીરમાં જેમ બે આંખો ટમટમી રહી છે, તેમ આ બ્રહ્માંડરૂપી જાળમાં સુર્યરૂપી ચક્ષુ ચમકી રહ્યું છે. તે રુદ્રદેવ છે. જેને માટે આ ઉપનિષદમાં શિવ, રુદ્ર, ઈશ, હર, ગિરિશંતુ, ઈશાન, વગેરે નામનો પ્રયોગ થયો છે. એ દેવે સર્વપ્રથમ હિરણ્યગર્ભને ઉત્પન્ન કર્યો અને તેમાંથી ધાવા-પૃથ્વી તથા બીજા અનેક દ્વંદ્વો ઉત્પન્ન થયા. આ શિવને જાણનારો જ મૃત્યુને તરી જાય છે. બીજો નહી ભીષ્મસ્તવરાજમાં કહ્યું છે કે -

महतस्तमसः पारे पुरुषं ह्यतितेजसम् ।

यं ज्ञात्वा मुत्युमत्येति तस्मै ज्ञानात्मने नमः ॥

આ ઉપનિષદમાં આત્માને માટે હંસ શબ્દોનો પ્રયોગ પણ કેટલીય વાર થયો છે. જેનો નિર્દેશ ઋગ્વેદમાં પ્રાપ્ત થાય છે. જેમ કે -

अनुष्टभमाचचूर्यमाणमिन्द्रं निचिक्युकँवयो मनीषा ।

ચોથા અધ્યયના બાવીસ મંત્રોમાં ફરીથી તે જ દેવનું નિરૂપણ છે. આ અધ્યાયમાં પુરુષને અજ અને પ્રકૃતિને અજા કહેલ છે. આ પ્રકૃતિના ત્રણ ગુણો સત્વ-રજસ્-તમસને અનુક્રમે સફેદ-લાલ-કાળા રંગના કહેલ છે. આ સંખ્યાની પ્રસિદ્ધ પરિભાષા છે. આ ઉપનિષદમાં વેદાંતનો બ્રહ્મવાદ તથા સાંખ્યનો પ્રકૃતિવાદ અથવા ત્રૈગુણ્યવાદ સ્પષ્ટ જોઈ શકાય છે. અહિં પ્રકૃતિ માટે 'માયા' શબ્દ પણ પ્રયોજવામાં આવ્યો છે. मायां तु प्रकृतिं विद्यात्' અને विश्वमायानिवृत्तिः । (ઋ. ૧- ૧૦) ઋગ્વેદનો द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया...... । પ્રસિદ્ધ મંત્ર પણ આમા લેવામાં આવ્યો છે. યજુર્વેદમાં 'सग्ज विचैति सर्वम्' અને શતપથ બ્રાહ્મણમાં प्राणोचै समग्चन प्रसारणम् । આ સમંચન પ્રસારણનો મુખ્ય સિધ્ધાંત છે. પ્રાચીનકાળથી શરૂ થયેલી જ્ઞાન-વિજ્ઞાનની પરંપરાનો સ્રોત આ બ્રહ્મ છે. 'प्रज्ञा च तस्मात् प्रसुता पुरीषो ।' (શ્વેતા. ૪-૧૮)

પાંચમાં અધ્યાયમાં જ્ઞાતાત્મક પ્રાણી-પદાર્થોવાળા નિર્માતા અને અધિપતિ એવા એક તત્ત્વનું નિરૂપણ છે. તે વિદ્યા અને અવિદ્યા આદિ દ્વંદ્વોથી પર છે. અહિં બીજા મંત્રમાં કપિલ ઋષિનો ઉલ્લેખ છે. સાયણાચાર્ય તેના અર્થ કપિલઋષિ જ માન્યો છે.

છઠ્ઠા અધ્યાયમાં ૨૩ મંત્રો છે. આમાં ત્રણ દેવતત્તવને વધારે વિસ્તારથી સમજાવ્યું છે. આ દેવતાનું નામ 'ज्ञ' હતું जानानीति ज्ञः । इति । ज्ञ દેવતાને માનનારા બ્રાહ્મણ કુળના વંશજો પણ 'ज्ञ'

Scanned by CamScanner

કહેવામાં આવતા જેમ કે –

ज्ञानां ब्राह्मणानामप्त्यमिति । ૪–૧–૧

- **ઉપસંહાર :-**

શ્વેતાશ્વર ઉપનિષદ મુજબ જે જીવાત્મા ત્રિગુણાત્મક છે. તથા કર્મ કરનારો છે તે જ ભોક્તા પણ છે. હૃદયમાં જે અંગુઠા જેટલો ભાગ છે. જે સુર્ય જેવો તેજસ્વી છે. તથા સંકલ્પ અને અહંકારથી યુક્ત છે. તે જીવાત્મા આરાની અણી જેટલો નાનો બનેલો દેખાય છે. વાળના છેડાના સોમો ભાગનો પણ સોમો ભાગ એ જીવને જાણવો. એ જીવ જ અનંત થવાને સમર્થ છે. (શ્વેતા. પૃ. ૧૧૨) 'आतमवत् सर्वभूतेषु' । એ સમાનતા એટલે જ્યારે જીવાત્મા પરમાત્માને નિયંતા તરીકે જુએ છે ત્યારે આ તો બધો એનો જ મહિમા હું જોઈ રહ્યો છું. એમ સમજીને શોકરહિત બને છે. (શ્વેતા પૃ. ૧૦૯) એ મહાન આત્મા એકલો જ દરેક જીવ અને વ્યક્તિગત સર્વ આકારોને નિયમમાં રાખે છે. (શ્વેતા. પૃ. ૧૧૧) એ એક દેવ સર્વ ભૂતોમાં છુપાયેલો, સર્વવ્યાપી, સર્વભુતોનો અંતરાત્મા, કર્મને પ્રેરનારો, સર્વભૂતોના નિવાસ્થાનરૂપ, સાક્ષી, ચૈતન્યસ્વરૂપ એક માત્ર અને નિર્ગુણ છે. એક છતાં તે અનેક અચેતન વસ્તુઓને વશમાં રાખે છે. તે જ એક મૂળ બીજને અનેક રૂપમાં પલટાવે છે. (શ્વેતા પૃ. ૧૧૫)

આમ, સંસારમાં રહેલાને માટે આના કરતા બીજો શ્રેયકર ઉપદેશ બીજો કયો હોઈ શકે ? મળ–મુત્ર–દુર્ગંધ વગેરેની શુધ્ધિ તો માટી, જળ વગેરેથી થાય છે. પરંતુ એ તો લૌકિક શુધ્ધિ છે. ખરી પવિત્રતાતો 'હું' અને 'મારું' વગેરેને દુર કરવાથી જ મળે છે. આમ, સંસાર એ અજ્ઞાનરૂપી મહારોગ છે. જ્યારે ઉપનિષદો તો આ મહારોગને મૂળમાંથી વિચ્છેદ કરનારા જ્ઞાનરૂપી ડોકટરો છે.

Scanned by CamScanner

HESMA

ISSN : 2319-5959

International Journal of Multi Disciplinary

Certificate

This is to certify that the Research Article /Paper/ Case Study titled

શ્વેતાશ્વતરોપનિષદમાં રહેલું તત્વજ્ઞાન

(Shwetashwataropanishadma Rahelu Tatvagyan)

Author : Parmar Mayaben Ramanbhai

Submitted by you published in

Month May Year 2014, Volume 2,

Issue 5 Page No. 21 in this

Open Access Peer Reviewed Refereed Jounal.

For further Information Please Visit

www.ramatjagat.com

Publisher
Hesma

Chief Editor
Hesma

Scanned by CamScanner